

जैन सिद्ध क्षेत्र मांगीतुंगिजी का गौरवशाली इतिहास



भारत में जैन धर्मावलंबियों के अनेक तीर्थों में ऐतिहासिक, धार्मिक और पर्यटन की दृष्टि से महाराष्ट्र के नासिक जिले की सटाण तहसील में स्थित मांगीतुंगि में कई जैन मंदिर होने से जैनियों का प्रसिद्ध धार्मिक स्थल एवं सिद्ध क्षेत्र है। यह क्षेत्र एक पहाड़ी पर स्थित है, जिस पर दो जुड़वां पहाड़ी चोटियां हैं। इनमें से एक चोटी मांगीजी है जो समुद्रतल से 4343 फीट ऊंची तथा दूसरी चोटी तुंगीजी है जो 4366 फीट ऊंची है। दोनों चोटियों पर गुफायें हैं। क्षेत्र पर पद्मासन और कायोत्सर्ग सहित कई मुद्राओं में तीर्थकरों की लगभग 600 प्रतिमायें भी विराजमान हैं। इनमें से कई प्रतिमाएं 569 ई. की मानी जाती हैं।

इस क्षेत्र का दर्शन करके आई डॉ. रुचि गोयल (जैन) ने बताया कि मांगीजी में सात मन्दिर हैं तथा तुंगी जी पर चार मन्दिर हैं। तीन मन्दिर पहाड़ी की तहलटी पर हैं। इनमें से दो पार्श्वनाथ भगवान के मन्दिर हैं तथा एक आदिनाथ भगवान का। गणिनी प्रमुख आर्यिका श्री ज्ञानमति माताजी की प्रेरणा से वर्ष 2016 में भव्य प्राण प्रतिष्ठा महोत्सव के साथ पहाड़ी पर अहिंसा की मूर्ति के नाम से अखंड पत्थर में उकेरी गई ऋषभदेव भगवान की 108 फीट (आसन सहित 113 फीट) ऊंची भव्य प्रतिमा स्थापित की गई थी। इस प्रतिमा को गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में दर्ज किया गया है।

जैन धर्मानुसार माना जाता है कि भगवान श्रीराम, भगवान हनुमान, सुग्रीव, नील, महानील इसी क्षेत्र से मोक्ष गये थे तथा इसके अतिरिक्त 99 करोड़ मुनिराज भी इसी क्षेत्र से मोक्ष की ओर उन्मुख हुए। यह भी माना जाता है कि श्री कृष्ण भगवान की मृत्यु और अन्तिम संस्कार भी यहीं हुआ था।

मांगी गिरि: मांगी पहाड़ी पर स्थित मुख्य मंदिर भगवान महावीर को समर्पित है। मूलनायक पद्मासन मुद्रा में 3.3 फीट महावीर की मूर्ति है। बाईं ओर चार अन्य मूर्तियाँ हैं। दीवार पर चार तीर्थकरों की मूर्तियाँ उकेरी गई हैं। इस पहाड़ी पर सात पुराने मंदिर हैं और यहां संतों के 'चरणों' के कई चित्र स्थापित हैं। यहां कृष्ण कुंड नाम का तालाब है। ग्रंथों के अनुसार, भगवान कृष्ण के बड़े भाई बलराम ने भी मोक्ष का अभ्यास किया और पांचवां स्वर्ग प्राप्त किया। यहाँ बलभद्र गुफा नाम की एक गुफा है जहाँ बलराम और कई अन्य की मूर्तियाँ स्थापित हैं।

गुफा संख्या 6 में मंदिर की मुख्य मूर्ति पद्मासन मुद्रा में भगवान आदिनाथ की 4.6 फीट लंबी मूर्ति है। गुफा की दीवार पर पद्मासन मुद्रा में बीस मूर्तियाँ हैं। इस मंदिर के मध्य में भगवान पार्श्वनाथ विराजमान हैं। दो तीर्थकर बैठे पद्मासन और दो कायोत्सर्ग मुद्रा में भी हैं। अन्य 28 मूर्तियों को भी यहां दीवार पर पद्मासन मुद्रा में उकेरा गया है। गुफा संख्या 7 में चार मूर्तियाँ चार दिशाओं में और चार दीवार के किनारों पर हैं। गुफा संख्या 8 में बीस मूर्तियाँ और सात जैन संत मूर्तियाँ हैं। गुफा संख्या 9 में 47 मूर्तियाँ तीन तरफ हैं और इस गुफा के बीच में भगवान पार्श्वनाथ की 2.1 फीट की मूर्ति है। गुफा की

दीवार पर 13 जैन संत भी दिखाई देते हैं। पहाड़ी की दीवार पर 24 तीर्थंकर की मूर्तियाँ और जैन संतों के पैरों के चित्र हैं जिन्हें इस पहाड़ी से मुक्ति मिलती है।

तुंगी गिरि : इस पर पांच मंदिर हैं। आठवें तीर्थंकर भगवान चंद्रप्रभु के नाम पर दो गुफाएँ हैं और दूसरी राम चंद्र गुफा है। यहां हनुमान, गावा, गावक्ष, नील आदि की प्राचीन मूर्तियाँ हैं। एक गुफा में तपस्वी संत की अवस्था में राम के सेना प्रमुख कृतान्तवक्र की मूर्ति है।

भगवान चंद्रप्रभा गुफा : मुख्य मूर्तियाँ भगवान चंद्रप्रभा पद्मासन मुद्रा में हैं जिनकी ऊँचाई 3.3 फीट है। अन्य 15 मूर्तियाँ हैं, जिनमें से सात मूर्तियाँ 2.1 फीट ऊँची और 8 मूर्तियाँ 1.3 फीट ऊँची हैं। कायोत्सर्ग मुद्रा में दीवार पर दो मूर्तियाँ उकेरी गई हैं जिनकी ऊँचाई 10 इंच है। सभी मंदिर 7वीं-8वीं शताब्दी के काल के हैं। तलहटी पर चार मन्दिर हैं।

भगवान पार्श्वनाथ जैन मंदिर : इस मंदिर की मुख्य मूर्ति पद्मासन मुद्रा में 3.8 फीट की भगवान पार्श्वनाथ की मूर्ति है। समवशरण मंदिर है और इस मंदिर में 12 मूर्तियाँ पत्थर से और 33 मूर्तियाँ धातु से बनाई गई हैं।

भगवान आदिनाथ मंदिर : इस मंदिर की मुख्य मूर्ति पद्मासन मुद्रा में भगवान आदिनाथ की 2.5 फीट की मूर्ति है। मूर्ति के बायीं ओर भगवान विमलनाथ की और दाईं ओर पद्मासन मुद्रा में चंद्रप्रभु की मूर्ति है। भगवान पार्श्वनाथ मंदिर : मुख्य मूर्ति पद्मासन मुद्रा में भगवान पार्श्वनाथ की 3.6 फीट की मूर्ति है। सहस्रकूट लोटस टेम्पल एंड गार्डन : इस मंदिर में 1008 मूर्तियाँ हैं।

मांगी और तुंगी पहाड़ियों के बीच के रास्ते में, शुद्ध और बुद्ध मुनियों (तपस्वी संतों) की दो गुफाएँ हैं। भगवान मुनिसुव्रत नाथ का एक कोलोसस यहां पद्मासन मुद्रा में है। भगवान बाहुबली और अन्य की मूर्तियाँ भी यहाँ हैं। दोनों पहाड़ियों पर कई मूर्तियों को चट्टानों पर उकेरा गया है। यक्ष और यक्षिणी (तीर्थंकरों के परिचारक) और इंद्र की सुंदर और आकर्षक पत्थर की नक्काशी यहाँ देखी जा सकती है।

जैन गुफाएँ : आदिनाथ और शांतिनाथ गुफाओं की दो मुख्य गुफाओं में आदिनाथ गुफा में 1343 ई. का एक शिलालेख मिलता है। देवताओं और ऋषियों के नाम पर कई अन्य गुफाएँ हैं जैसे सीतलनाथ, महावीर, आदिनाथ, शांतिनाथ, पार्श्वनाथ और रत्नात्र। जिन्हें वहां से मुक्त कराया गया था। पहाड़ियों की तलहटी में तीन मंदिर हैं जिनमें 75 से अधिक मूर्तियाँ हैं।

श्री मांगी तुंगीजी दिगंबर जैन सिद्ध क्षेत्र भारत के महाराष्ट्र में नासिक जिले की बगलान तहसील में स्थित है। यह नासिक से लगभग 125 किलोमीटर, मनमाड सिद्धक्षेत्र से 69 किलोमीटर, गजपंथा से 125 किलोमीटर और एलोरा से 180 किलोमीटर दूर है। यह दिल्ली-भोपाल-खंडवा केंद्रीय रेल मार्ग पर स्थित है, जो तहराबाद से वाया (सताना- तहराबाद) 10 किमी दूर है। निकटतम हवाई अड्डा नासिक में है। मांगी तुंगी के लिए नासिक, मालेगांव और मनमढ़ से टैक्सी और बसें उपलब्ध हैं। यहां आवास एवं भोजन की पर्याप्त सुविधाएं उपलब्ध हैं।

(लेखक कोटा में रहते हैं व पर्यटन से लेकर सांस्कृतिक व ऐतिहासिक विषयों पर शोधपूर्ण लेख लिखते

١٤

